ऊपर लिखे उपचारों के साथ-साथ पशुपालकक ग्रसित पशुओं को हिस्टेमिन की अधिक खुराक दे सककते हैं। हृदय का कार्य कमजोर एवं मन्द हो जाने पर कैल्शियम और डैक्स्ट्रोज के उत्तेजक कार्य को बढ़ाने के लिये आधा ग्रेन स्ट्रिक्लीन सल्फेट को अन्तःपेशी द्वारा दिया जा सकता है। हल्की उत्तेजना को दूर करने हेतु कपूर, तेल में मिलाकर दे सकते हैं। कभी-कभी दूध दुहने के बाद थनों में थोड़ा-थोड़ा दूध छोड़ देना चाहिये इसके द्वारा भी दुग्ध ज्वर से बचाव किया जा सकता है। परन्तु ध्यान रहे ज्यादा दूध छोड़ने से थनैला रोग होने का डर रहता है।

प्रसव के पहले पशु को खाने में अमोनिया क्लोराइड लवणों को मिलाना चाहिये, इससे दुग्ध ज्वर होने की सम्भावना कम रहती है। यह रोग संक्रामक नहीं है अतः अन्य गोवंश में नहीं फैलता मगर बचाव के लिये प्रसव से पहले, प्रसव के समय व प्रसव के बाद, पशु को कैल्शियम क्लोराइड मुँह द्वारा देना चाहिये। विटामिन डी$_3$ का भी उपयोग किया जा सकता है। उपरोक्त उपचार पशुपालक पशुचिकित्सक की देखरेख में ही करें।

संपादक -
डा० आर० के० झा
कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र
मांझी, सारण

संकलन -
डा० प्रकाश चन्द्र हिमांशु
पशुपालन वैज्ञानिक
कृषि विज्ञान केन्द्र
मांझी, सारण

Printed by : Shree Kamta Press, Salempur, Chapra

पशुओं में दुग्ध ज्वर की समस्यों से छुटकारा

कृषि विज्ञान केन्द्र, माँझी, सारण

राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, पूसा
समस्तीपुर, बिहार

गोपशुओं में दुग्ध ज्वर की समस्या से कैसे निपटें –

दुग्ध ज्वर मुख्य रूप सें अधिकक दूध देने वाले पशुओं में देखने को मिलता है। यह आमतौर पर ब्याने के 72 घन्टे बाद होता है परन्तु कभी-कभी प्रसव के कुछ पूर्व भी हो जाता है। इस बीममारी में साधारणतया रक्त में कैल्शियम् की मात्रा सामान्य से काफी नीचे आ जाती है। किन्तु इस बीमारी में बुखर बिल्कुल नहीं होता है। यह रोग अपनी दुग्ध उत्पादन की उच्चत्तम सीमा पर पहुँच चुकी गायों (5 से 9 साल की उम्र) में ज्यादा होता है। प्रसव के कुछ महीने अथवा कुछ सप्ताह बाद इस रोग की सम्भावना बहुत ही कम होती है। कैल्शियम की तीव्र कमी इस बीमारी का मुख्य कारण है। अधिक दूध देने वाली गाय इस रोग से जयादा पीड़ित होती हैं। गर्भवती गायों में कैल्शियम भ्रूण की हड्डियों में चला जाता है तथा अधिक दूध देने के कारण भी कैल्शियम की मात्रा में कमी आती है जिससे गायों की हड्डियाँ कमजोर हो जाती हैं। अधिकतर दुग्ध ज्वर से पीड़ित गायों में अकार्बनिकक फास्फोरस की मात्रा भी सामान्य से कम मिलती है।

रोग के लक्षण

शुरूआत में प्रभावित पशु में उत्तेजना, ट्टैटैनी और सिर व पैरों की मांसपेशियों में कम्पन मिलते हैं जिसके कारण पशु एक स्थान पर बैठा रहता है या लेट जाता है और न ही कुछ खाता है। इस रोग में सिर का हिलाना, जिह्वा का उद्वर्तन व दाँतों का पीसना भी पाया जाता है। रेक्टम का तापमान अधिकतर सामान्य अथवा सामान्य से थोड़ा कम पाया जाता है। पिछली टांगों में कठोरता स्पष्ट होती है।

ग्रसित गाय निद्रालु अवस्था में आ जाती है और ज्यादातर गर्दन पीछे मोड़कर बैठती हैं और सिर को मोड़कर पैरो में रख लेती हैं। टांगों की ट्टैटैनी खत्म हो जाती है और गाय उठने योग्य नहीं रहती हैं। पशु का थूथन शुष्क

हो जाती है। त्वजा एवं पैर ठन्डे होते हैं और मलाशय का ताप सामान्य से कम (67-101^0 फा०) होता है। पुतलियाँ विस्फारित होती हैं। आँखें शुष्क एवं घूरती हुई होती हैं। मलद्वार शिथिल हो जाता है एवं गुदाप्रतिवर्त खत्म हो जाता है। ह्रदय ध्वनियों की तीव्रता में काफी कमी आ जाती है। कब्ज इस बीमारी के विशेष लक्षण हैं। श्वसन विशेष रूप से प्रंभावित नहीं होता है।

रोग की तीव्र अवस्था में पशु बेहोश हो जाता है। अफरा प्रत्यावहन और चुशण न्यूमोनिया हो जाता हैं। नाड़ी की गति 120 प्रति मिनट तक हो जाती है।

उपचार एवं बचाव

दुग्ध ज्वर का निदान आमतौर पर लक्षणों के आधार पर किया जाता है। रोगी गाय को कैल्शियम रक्त वाहिनी के माध्यम से तुरन्त देना चाहिये। कैल्शियम बोरोग्लूकोनेट इसकी बहुत अच्छी दवा है। गाय के लिये 100-200 ग्राम योगिक 20-30 प्रतिशत घोल के रूप में 400-800 मि० ली० 25 प्रतिशत घोल या 20 प्रतिशत कैल्शियम ग्लूकोनेट और 4 प्रतिशत बोरिक एसिड दिया जाता है।

प्राप्य जीवरासायनिक परीक्षणों एवं रोगों के लक्षणों के आधार पर मैग्नीशियम, फास्फोरस या डैक्स्ट्रोज से पूर्ण घोलों के इन्जैक्शन (ग्लूकोज का 40 प्रतिशत घोल 500 मि० ली०, सोडियम एसिड फास्फेट का 15 प्रतिशत घोल 200 मि० ली०, मैग्नीशियम सल्फेट के 15 प्रतिशत घोल का 200-400 मि० ली०) अन्तः शिरा द्वारा देने चाहिये।

अयन में ऑक्सीजन के कुण्ड के द्वारा अथवा साधारण साईकिल के पम्प द्वारा हवा भर देते हैं फिर किसी गौज-टेप की सहायता से थन को तीन घंटे के लिये सावधानीपूर्वक बाँध देना चाहिए, ताकि अब हवा अयन के अन्दर मौजूद रहे। तीन घंटे बाद थनों के बन्धनों को खोल देना चाहिए क्योंकि ज्यादा देर बाँधे रखने से थन घायल हो सकते हैं। इसमें कैल्शियम दुग्ध से परिसंचरण तंत्र में आ सकता है।